भारत-स्वातन्त्र्य-स्वर्णजयन्ती-ग्रन्थमाला-23

वाग्वैभवम्

श्रीकृष्णसेमवालः

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्

भारत-स्वातन्त्र्य-स्वर्ण-जयन्ती-ग्रन्थमाला-23

वाग्वैभवम्

श्रीकृष्णसेमवालः

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्

1998

(९)

तृणमिदमिति जाने नास्ति सत्ताऽस्य काचिद्,
वियति पवनदास्यं स्वीकरोत्येव नूनम्।
परमिदमपि नेत्रे चेत् पतेद्दैवयोगात्,
जनयति बहुपीडां नास्ति सन्देहलेशः॥

मैं जानता हूं यह एक छोटा सा तिनका है, इसकी अपनी कोई भी सत्ता नहीं, यह निर्विवाद सत्य है कि यह आकाश में वायु की दासता से ही उड़ सकता है। परन्तु यह भी दैवयोग से आँख में पड़ जाय तो अतिशय पीड़ा को उत्पन्न करता है; इसमें कोई भी सन्देह नहीं है।

(१०)

वितरति भुवने यो गन्धमेतं सगर्वं,
विविधविषयभोगी यत्र कुत्रापि वायुः।
किमपि न हि तदीयं केवलं भारवाही,
मनुज! भव सतर्कश्छद्मरूपे त्वमस्य॥

विविध प्रकार के विषयों का भोग करने वाला वायु अभिमान-पूर्वक संसार में जहां कहीं भी सुगन्ध को फैलाता है, वस्तुतः वह उसकी अपनी वस्तु नहीं है, वह तो केवल भारवाही है। इसलिए हे मनुष्य! इसके कपटी स्वरूप से तुम सावधान हो जाओ।

राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थानम्

56-57, इन्स्टीट्यूशनल एरिया, जनकपुरी,
नई दिल्ली-110058